शिव-गरिमा

काशी शिवपुरी आश्रम की मासिक ई–पत्रिका

अंक -2 : माह-फरवरी 2023

आशीर्वाद :

प.पू. परमहंस स्वामी सुगंधेश्वरानंद, राजयोगी प्रभु बा

प्रकाशक : एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट

सद्गुरु-संदेश

परिणाम और प्रमाण

सभी साधकों को जय श्री कृष्ण और अनेकानेक शुभ आशीर्वाद।

जनवरी माह मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। कई वर्ष पहले इसी महीने की 7 तारीख को मेरे प्यारे सद्गुरु ने मुझे शक्तिपात दीक्षा प्रदान कर कृतार्थ किया था। इसके ठीक 8 दिन बाद उन्होंने अपना स्थूल शरीर त्याग दिया था। जैसे कि आम परंपरा है सभी जगह 15 जनवरी को मेरे गुरुदेव की पुण्यतिथि मनाई जाती है। परंतु व्यक्तिगत तौर पर मैं यह नहीं मानती हूं। मेरे सद्गुरु कोई साधारण शरीरधारी मानव नहीं हैं। शरीर छूटने के बाद भी उनका अस्तित्व विद्यमान है। वे आज भी शक्ति स्वरूप में उनके हर साधक के साथ और इसी तरह मेरे साथ भी मौजूद हैं। हर पल उनके होने के प्रमाण मिलते हैं। वे साक्षात और शाश्वत हैं तथा स्वयं दत्त हैं।

सद्गुरु ने जिस दिन संकल्प दीक्षा प्रदान की उस दिन से मेरा जीवन पूरी तरह बदल गया। मैं इसे मेरा दूसरा जन्म मानती हूं। एक वह जो मां के उदर से हुआ और दूसरा जो सद्गुरु से दीक्षा प्राप्त कर उनके शिष्य के रूप में हुआ। यही जन्म सत्य है।

दीक्षा मतलब पुनर्जन्म। उस दिन से एक नई यात्रा, आध्यात्मिक यात्रा अथवा साधन यात्रा आरंभ होती है। यह यात्रा जीवन की अंतिम सांस तक जारी रहती है। यदि हम सच्चे साधक हैं तो अगले जन्म में सद्गुरु फिर हमारी उंगली पकड़कर अधूरी रही यात्रा को पुनः आगे बढ़ाते हैं। सद्गुरु कहते हैं कि वे अपने हर साधक को उसके आध्यात्मिक लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए संकल्पित हैं। इस यात्रा को पूर्ण होने में यदि 3 जन्म भी लग जाए तो भी वह हर जन्म में उस साधक के साथ होते हैं।

साधन, मतलब क्या? नियमित साधना के क्या परिणाम और क्या प्रमाण होते हैं? यह प्रश्न हर एक समर्पित साधक के मन में उत्पन्न होता ही है। साधन का मतलब दीक्षा के समय तथा उसके पश्चात भी समय-समय पर सद्गुरु ने जो भी हमें ध्यान, जप व सत्संग सेवा के रूप में करने को कहा है उसे हर रोज अखंड रूप से पूरी श्रद्धा और विश्वास के साथ उस का आनंद लेते हुए करते रहना चाहिए। सद्गुरु के प्रत्येक आदेश का पालन करना चाहिए।

साधन का परिणाम है-अंतःकरण की शुद्धि या चित्त की शुद्धि। इसका परिणाम है सकारात्मक सोच का विकास, कर्तव्य परायणता व दक्षता, वाणी में सत्यता, मन में करुणा व दया का संचरण, क्षमाशीलता, दिल में सभी के लिए निस्स्वार्थ प्रेम, अहंकार का विसर्जन, बोलने में माधुर्य, आचरण में शुचिता, आहार में सात्विकता एवं शरीर की स्वच्छता। सार रूप में कहें तो दुर्गुणों का क्षय और सद्गुणों का उदय।

जो साधन के परिणाम हैं वही साधन के प्रमाण भी हैं। किसी साधक को यह कहने, दिखाने या उजागर करने की कभी आवश्यकता नहीं पड़ती है कि मैं नियमित साधन कर रहा हूं। उस साधक के भीतर साधना की वजह से होने वाले सकारात्मक परिवर्तनों को उसके परिवार के सदस्य, मित्र, साधकगण और सद्गुरु स्वयं महसूस करने लगते हैं। हमारे इस अद्भुत मार्ग में जो भी परिवर्तन होता है वह होता तो भीतर है किंतु उसके प्रमाण बाहर दिखते हैं। मैंने कई बार कहा है कि एक साधारण मनुष्य व सच्चे साधक में अंतर कैसे कर सकते हैं? साधक के ना तो सिर पर सींग उग जाते हैं और ना ही पूंछ निकल आती है। यानी कि सामान्यतः देखने में कुछ अलग सा लगता नहीं है लेकिन किसी भी साधक के व्यवहार, आहार और वाणी से उसके साधन के स्तर का पता चल जाता है।

सच्चा साधक अंतर्मुखी होता है। अपने ध्यान व साधना का औरों के सामने बखान या प्रदर्शन नहीं करता। वह किसी भी परिस्थिति में विचलित नहीं होता। वह कभी स्वयं को श्रेष्ठ नहीं समझता। उसमें किसी के भी लिए प्रतिस्पर्धा का भाव नहीं आता और सबसे खास बात यह है कि उसके मुख से कभी भी किसी के भी लिए अपशब्द या शापवाणी नहीं निकलती। वह हमेशा बड़ों का आदर, सहयोगियों के साथ परस्पर सम्मान व छोटो से प्रेमपूर्वक व्यवहार करता है।

अपने हर साधक से मेरी यही अपेक्षा है कि इस मार्ग से जुड़ने के बाद वह सबसे पहले सहज, सरल व सच्चा व्यक्ति बनने की कोशिश करें। अगर इतना भी बन सके तो आज के इस युग और काल में यह किसी चमत्कार से कम नहीं है। बाकी आगे की यात्रा पर ले जाने के लिए तो सद्गुरु स्वयं ही सक्षम हैं और हमसे भी ज्यादा आतुर हैं। हमारे लिए साधन रूपी सुगंध पथ का पथिक होना परम सौभाग्य की बात है।

-आपकी अपनी बा

सहज अभिव्यक्ति

'शिव गरिमा' का द्वितीय अंक सद्गुरुकृपा से आपको प्रेषित करते हुए गुरुदेव के अनेकानेक आशीर्वाद एवं जय श्री कृष्ण।

यों तो अपनी शक्तिपात परंपरा में करने का महत्व ही प्रधान है किंतु तत्संबंधी पठन-पाठन व श्रवण-मनन भी किसी स्तर पर आवश्यक है। कई बार हम चाहते तो बहुत कुछ करना है परंतु कोई बाधा आती है तो गति थम सी जाती है। उस बाधा को पार करते हुए पुनः अपनी गति- मति को साध सकें तो उत्साह द्विगुणित होना स्वाभाविक है।

हमारा सौभाग्य है की गुरुदेव से हम प्रत्यक्ष मिलने पर अपने मन में उत्पन्न किसी भी विचार की पुष्टि या प्रश्न का उत्तर जान सकते हैं। कदाचित् यह संभव नहीं हो पाता तो गुरुदेव के सान्निध्य में होने वाले सत्संग में किसी न किसी माध्यम से हमें दिशा मिल जाती है। यह भी न हो सके तो इस पत्रिका के द्वारा समाधान पाने का अवसर रहता है। आवश्यकतानुसार इस सुलभता का उपयोग अवश्य करें।

गुरुदेव से अनुग्रह प्राप्त हुए किसी को लंबी अवधि हो चुकी है तो कोई अभी-अभी दीक्षित हुआ है। प्रश्न नए व पुराने का नहीं होकर साधन की गहनता व नियमितता का है। जो भी साधक गुरुदेव द्वारा बताए गए साधन को नियमपूर्वक उपयुक्त विधि से करता है

वह गुरुदेव के उतना ही समीप होता है। जप और ध्यान गुरुदेव ने हमारे ही कल्याण के लिए बताए हैं। जप के द्वारा हम सांस की लय को साधते हैं जिससे हमारे पूर्व के कलुष समाप्त होकर निर्मलता का आविर्भाव होता है। नाड़ियों की शुद्धि, भावों की कोमलता तथा विचारों में उदात्तता अनुभव होने लगती है। इन गुणों के प्राकट्य का उपयोग हम ध्यान के द्वारा स्वयं की शक्ति को ऊर्ध्व दिशा में ले जा सकते हैं। हमारी सुसुप्त शक्ति को सद्गुरु जागृत कर देते हैं उस जागृत शक्ति को ऊपर की ओर ले जाते हुए विभिन्न चक्रों तक की यात्रा कराना हमारे साधन पर निर्भर है। सद्गुरु अपने तप व सामर्थ्य से यह सब कुछ कर सकते हैं पर वह हमें ही करने को प्रेरित करते हैं ताकि अनुभूतियों से हमारा साक्षात्कार होता रहे। ऐसे परम हितेषी सद्गुरु को पा लेना भी अपने जीवन की एक महत्ती उपलब्धि है। नियमपूर्वक व उपयुक्त करना है।

'शिव-गरिमा' हमारे पथ के लिए सहायक हो इसी भाव के साथ जय श्री कृष्ण।

आपका ही
स्वामी गुरुराजेश्वरानंद

सत्संग

सत्य का संग ही सत्संग है। सत्य वही है जो शाश्वत है। जो देश, काल व परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित न होकर सदैव स्थिर व सुस्पष्ट होता है वही सत्य है। ऐसे सत्य की संगत ही सत्संग है। सामान्य अर्थ में इसे संतों के साथ चर्चा, भजन, कीर्तन आदि रूप में भी जाना जाता है। सत्संग के अनेक प्रकार हो सकते हैं पर बहुप्रचलित रूप में प्रवचन व स्तुति ही हैं।

हम जिस परंपरा से जुड़े हैं उसमें प्रवचन की प्रधानता नहीं है। प्रवचन का भी अपना महत्व होता है किंतु उसमें स्व का अनुभव इतना नहीं जुड़ पाता है। उसमें वक्ता की कुशलता, विषय का प्रतिपादन तथा श्रोता की भाव दशा आदि कई सारे तथ्य होते हैं तभी पूर्ण फलदायी योग बनता है। इसलिए शक्तिपात परंपरा की मान्यता है कि कहने- सुनने के बजाय करना ही श्रेयस्कर है। फिर भी करने के लिए भाव दशा का आधार प्रारंभिक दौर में तो चाहिए ही होता है। इसलिए गुरुदेव के सत्संग में भजनों के माध्यम से आधार बनाने का कार्य संपादित होता है। भजनों की सुविधा यह है कि वे चिर प्रचलित होते हैं, उनमें गेयता होती है तथा प्रस्तुतकर्ता व श्रोता दोनों समवेत रूप से दोहरा सकते

हैं। आवश्यकतानुसार भजनों की पंक्तियों व भावों का विश्लेषण होता रहे तो शब्द अर्थ बनकर उतरते जाते हैं। मध्यकाल की निर्गुण उपासना में भजनों को 'उधेड़ना' इसी प्रकार का कार्य था।

अपनी परंपरा में सत्संग में भजन का होना किसी गायक व साधक पर कम निर्भर है और गुरुदेव पर ज्यादा। गुरुदेव द्वारा संदेश देने की एक महत्वपूर्ण विधि भजन भी है। इसलिए वह साधकों पर दृष्टिपात करके यह ज्ञात कर लेते हैं कि ज्यादातर साधकों के मन में क्या वैचारिक हलचल हो रही है। तब वे तत्संबंधी प्रेरणा, समाधान या भाव-दीप्ति हेतु भजन का चयन कर गायकों से प्रस्तुत करवाते हैं।

यूं तो भजन शब्दों का समूह ही है पर वह शब्द जब वातावरण व जरूरत के आकलन के बाद निकलते हैं तो उनकी चोट बड़ी गहन होती है। वही चोट जब हृदय को स्पंदित कर जाती है तो साधक का बोध-द्वार खुलता चला जाता है। इस दृष्टि से सत्संग भी ध्यान के समकक्ष ही उपादेय है। सामान्यतः अपनी सत्संग में भजनों के बोल साधारण भाषा में होते हैं या भजन ऐसे होते हैं जिन्हें अनेक बार पूर्व में भी सुन चुके हैं। इसके पीछे भी गहरी बात यही है कि साधक को वह भजन अपने भीतर से प्रस्फुटित होता सा लगे। उस भजन के साथ वह पूरा जुड़ जाए। सद्गुरु के सान्निध्य में वह भजन जीवंत होकर रोम-रोम को तरंगित करने लगता है। इस दशा में भी तन व मन की शुद्धि होती है। सात्विक भाव जागृत होने लगते हैं।

अपने मार्ग में सत्संग का अर्थ सत्य का संग ही नहीं, सत्य के लिए सत्य के साथ यात्रा भी है। शाश्वत सत्य को उपलब्ध हो जाने का प्रयाण भी है।

प्रभु बा का अनुभव

बात तब की ही है जब हम गिरगांव में रहते थे। सेवा एवं साधना के लिए उस समय नियम पूर्वक प्रतिदिन 3 – 4 घंटे के लिए साधिका मुळे ताई आया करती थी। यद्यपि उनके पतिदेव प्रज्ञाचक्षु थे तो भी उनके लिए भोजन बनाकर, चाय आदि के सामान का प्रबंध करके आ जाती थी। उनकी सेवा भावना एवं साधन की गति बहुत अच्छी थी। वे परिवार की सदस्य जैसी ही थी।

मैं अपने ध्यान में अनेक बार गुरुदेव के चरणों की सेवा करती थी। इससे पहले एक बार ध्यान में कौतूहलवश मैंने गुरुदेव की आंखों में झांका था। उन आंखों में सीताफली व पीला रंग साफ दिखाई दिया। नीले रंग का कोर्निया और उससे निकलती स्वर्णिम रेखाएं और उन आंखों से प्रवाहित होता दिव्य प्रकाश। उस तेज का दर्शन मेरी सामर्थ्य से परे था इसलिए उसके बाद मैं केवल चरण सेवा में ही रत रहती थी। ध्यान में चरण सेवा करते हुए उन पर चंदन व कपूर का लेपन, उनको सहलाना, दबाना करती थी। यही मेरी सेवा थी।

एक बार सपने में चरण सहलाते हुए मैंने देखा की गुरुदेव के दाएं पैर के पंजे पर अंगुलियों से ऊपर कोई निशान बना हुआ था। जिज्ञासावश गौर से देखा तो कोई छोटे घाव जैसा लगा। मुझे ध्यान आया कि मैं तो इसे देखे बिना ही लेपन करती रही हूं तो गुरुदेव को इससे कितना कष्ट हुआ होगा? अगले दिन ध्यान में मैंने पूछा कि गुरुदेव यह घाव जैसा निशान किसका है? जैसा उनका स्वभाव था वह मंद मंद मुसकुराए और बोले कि समय आने पर बताएंगे।

उस समय हमारा संयुक्त परिवार था, सदस्यों की संख्या बहुत थी। खाना बनाने और खिलाने और घरेलू काम में ही सारा दिन व्यतीत हो जाता था। इसलिए हम हर एकादशी को रसोईघर एवं पूजाघर की सफाई करते थे। रसोई के हर डिब्बे को खाली करके साफ करना और भरना तथा पूजाघर के हर विग्रह, हर चित्र व हर उपकरण को साफ करना रहता था। अगली ही एकादशी को मैं, पुष्पा काकी, गीता काकी आदि रसोईघर की सफाई में लगे थे और मुळे ताई पूजाघर की सफाई में। सहसा वे अत्यंत घबराई हुई दौड़ी-दौड़ी हमारे पास आई। कहने लगी-ताई देखो यह क्या हो रहा है? इसके साथ ही वह जोर-जोर से रोने भी लगी। हमने पूजाघर में जाकर देखा एक परात में वे चंदन की लकड़ी से निर्मित गुरु पादुकाएं धो रही थी और तभी उन्होंने देखा कि एक पादुका के पंजे पर घाव जैसा है तथा उससे खून रिस रहा है। वे यही देख कर घबरा गई थी और रोए जा रही थी। वे बार-बार सफाई भी दे रही थी कि मैंने तो धीरे-धीरे ही इन्हें नहलाया था। तब मैंने कहा-देखो पादुका के ऊपर रोज चंदन व कुमकुम का टीका व लेप लगता रहता है। हो सकता है कि पादुका में वह जम गया

होगा तो धोने पर उतर रहा होगा। थोड़ा पानी डालो और धीरे-धीरे साफ हो जाएगा। पुष्पा काकी ने जलधार से उसे साफ करना शुरू किया लेकिन थोड़ी देर बाद फिर खून रिसने लगा। अब तो मैं भी सिहर उठी। कहने लगी गुरुदेव हमसे क्या अपराध हो गया? ऐसा क्यों हो रहा है? मुझे भी हृदय से पीड़ा होने लगी। मैंने उस पादुका को शीतल जल एवं दूध से प्रक्षालन किया। कोई दो-तीन घंटे तक ऐसा करने पर खून का रिसना बंद हो सका।

अगले दिन ध्यान में गुरुदेव से इस घटना का निवेदन किया। वे कहने लगे-आपने जो पैर में खून रीसते देखा है वह सांप के द्वारा दंश का परिणाम था। मैं तो यह सुनकर सन्न सी रह गई। घबराकर अपनी गुरु परंपरा से यह याचना करने लगी कि क्यों मेरे गुरुदेव को ऐसा दुर्योग देखना पड़ा? मैं भीतर तक हिल गई। तभी गुरुदेव खिलखिलाकर हंसने लगे। मैं बड़ी असमंजस में थी कि गुरुदेव को सांप ने डसा, घाव हुआ, खून रिसा। पादुका में भी ठीक उसी स्थान पर खून निकला और बहुत जतन करने पर रुका। और गुरुदेव तो हंस रहे हैं। जब गुरुदेव की हंसी रुकी तो वे बोले- सुगंधा, मैं तो तुम्हारी परीक्षा ले रहा था। ऐसी परिस्थिति में तुम क्या सोचती हो, क्या करती हो, यही देखना था। गुरुदेव की यह बात सुनकर मुझे आहत भाव से राहत भाव मिला। मैंने गिड़गिड़ाते हुए कहा गुरुदेव, कृपया ऐसी परीक्षा कभी न लें। मैं किसी भी परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो पाऊंगी। गुरुदेव ने मेरी विनती स्वीकार ली। उनकी दयालुता एवं भक्तवत्सलता के कारण उसके बाद ऐसी घटना कभी नहीं हुई। वे ही पादुकाएं वर्तमान में शिवपुरी आश्रम के सद्गुरु मंदिर में बिराजमान हैं।

जीवात्मनं परमात्मनं, दानं ध्यानं योगो ज्ञानं।
उत्कल काशी गंगामरणं, न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं।।

आत्मा व परमात्मा का ज्ञान मानव जीवन की लक्ष्यात्मक खोज है। अपनी आत्मा को अनुभव करके उसे परम अवस्था में स्थित करते हुए स्वयं परमात्म-अंश होने का भाव आध्यात्मिक सिद्धि का परिचायक माना गया है। वैसे ही दान की महिमा को श्रेष्ठ सत्कर्म जाना गया है। वह दान चाहे द्रव्य का हो, ज्ञान का हो या भक्ति का। दान करने से हृदय में निर्मलता आती है एवं अनासक्ति का आविर्भाव होता है।

माना जाता है कि उड़ीसा में सागर तट पर स्थित पुरी एवं गंगा तट पर बसी काशी में मृत्यु को प्राप्त होने वाला जीव मुक्ति को पा जाता है। इन सब भावों, क्रियाओं व पावनताओं की अपनी महत्ता है। बार-बार ये कथन सत्य सिद्ध भी हुए हैं किंतु वृहद् विज्ञान परमेश्वर तंत्र में आए त्रिपुरा-शिव संवाद में उक्त श्लोक के अंत में शिव जी कहते हैं-यह सब ज्ञान, स्थान व कर्म अलग-अलग बातों में फलदाई हैं। परंतु ये सारे मिलकर भी गुरु से श्रेष्ठ नहीं हैं। उक्त फल तो गुरु कभी भी, कहीं भी तत्काल प्रदान कर सकते हैं। गुरु इससे आगे की यात्रा पर ले चलते हैं इसलिए यह गुरु से अधिक नहीं कहे जा सकते। गुरु से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है।

शक्तिपात परंपरा में कोई भी साधक जुड़ना चाहे तो यह प्रचलन है कि वह सद्गुरु से दीक्षा की प्रार्थना करे। परंपरा में मान्यता है कि सद्गुरु से तीन बार याचना करने पर उसकी दीक्षा का उचित अवसर आ गया है या अभी देर है इसका निर्णय सद्गुरु करते हैं। सामान्यतः यह सद्गुरु व संभावित शिष्य की आंतरिक व नितांत व्यक्तिगत घटना है। पर दीक्षित होने के बाद कोई भी शिष्य साधक– परिवार का सदस्य हो जाता है तो कुछ बातें जो साधारणतया सबके लिए पालनीय हैं वे उस पर भी लागू होती हैं।

कई साधक दीक्षित होने के बाद कुछ समय तो उत्साहपूर्वक जप व ध्यान करते हैं फिर जल्दी ही शिथिलता व्याप्त होने लगती है। प्रमाद या साधन की प्रारंभिक सफलता का आकलन करने वाले धीरे–धीरे साधन अनियमित या बंद ही कर देते हैं। दूसरी ओर कई साधक नियमित साधन करते हैं तथा सद्गुरु के प्रति श्रद्धा व निष्ठा भी पूरी होती है किंतु लंबी अवधि तक वे सद्गुरु के दर्शन हेतु उपस्थित नहीं होते। इसके पीछे दूरी, प्रतिकूलता और अस्वस्थता आदि कारण भी हो सकते हैं जो आंशिक रूप से उचित भी कहे जा सकते हैं। इन कारणों के अलावा भी कई साधक यह अभिव्यक्त करते नहीं थकते हैं कि उनके जीवन में सद्गुरु का स्थान सर्वोपरि है। सद्गुरु सदैव उनके साथ हैं इसलिए वे दर्शन कर पाएं या नहीं पर आस्था तो पूरी ही है।

यहां यह विचारणीय बिंदु है कि क्या केवल आस्था के लिए सद्गुरु से अनुग्रह लिया है? क्या केवल अपने लिए एक श्रद्धावान साधक जोड़ने के लिए सद्गुरु ने दीक्षा दी है? आस्था व निष्ठा तो किसी पौधे की डालियां व पत्ते हैं। पौधा उगा तो ये तो सहज रूप से आने ही हैं। पर केवल डालियों व पत्तों से ही पौधे का अस्तित्व है? अनुग्रह के साथ सद्गुरु साधक के अंतस में अध्यात्म का बीज बोता है। उसकी सोई हुई शक्ति को जगा कर उस बीज के अंकुरण की रचना करता है। जब पौधा होकर साधन के रूप में वह पनपने लगता है तब उस पर डालियां व पत्तियां भी आती हैं। यही महत्वपूर्ण समय होता है जब पौधे की वृद्धि को सही दिशा की आवश्यकता होती है। पौधा ठीक से बढ़ रहा है या नहीं? उसमें किस तत्व की कमी है? कौन सा तत्व अनावश्यक बढ़ रहा है? किससे हानि की संभावना है? ऐसी अनेक सूक्ष्म बातें तो कोई सद्गुरु रूपी माली ही समझ सकता है। इसलिए बार-बार ऐसे माली की देखरेख आवश्यक है।

सद्गुरु भी साधक के साथ ऐसा ही करता है। साधक के सामने होने पर वह अपनी दृष्टि, अपने स्पर्श, अपनी वाणी या अन्य उपक्रमों से वह साधक की आवश्यक काट-छांट करके उसे स्वस्थ व शक्तिशाली बनाता है। किसे, कब, कितनी ऊर्जा की आवश्यकता है यह सद्गुरु साधक को देखकर ही निर्णय करके प्रदान करता है इसलिए अध्यात्म जगत में सद्गुरु के बार-बार दर्शन का महत्व है। यदि यह कार्य इस जन्म में नहीं हो पाता तो सद्गुरु उसे अगले जन्म में पूरा करने के उत्तरदायी होते हैं। साधक को सोचना है कि वह इस जन्म में ही कृपा चाहता है या किसी अगले में?

हमारे सद्गुरु भी साधकों से निरंतर आत्मीय आग्रह करते रहते हैं कि वापस जल्दी आना। कोई साधक जब सद्गुरु दरबार में पहुंचता है तो उसे देखकर सद्गुरु की प्रसन्नता फूट पड़ती है। दर्शन के समय उसके लिए उचित व आवश्यक खुराक बिना जताए ही प्रदान कर दी जाती है। यह सब गुरु कृपा से होता है। इसलिए निष्ठा व श्रद्धा का अपना महत्व है किंतु सद्गुरु दर्शन तो साधक के लिए अनिवार्य साधना है।

चैतन्य दिवस साप्ताहिकी शिवपुरी

चैतन्य दिवस के उपलक्ष्य में वृंदावन आश्रम के निकट गांवों में अन्नदान व वस्त्रदान

मकर संक्रांति पर शिवपुरी आश्रम में ईंटालीखेड़ा के सेवक समाज का सम्मान

15 जनवरी को उदयपुर में श्रीमती रेखाजी एवं श्री दिनेश जी भट्ट के निवास पर 12 घंटे का अखंड नाम संकीर्तन

15 जनवरी को सिंगापुर में श्री श्रीप्रसादजी एवं श्रीमती शिल्पाजी अय्यर के निवास पर अखंड नाम संकीर्तन

मकर संक्रांति पर शिव त्रिपुर आश्रम, बांसवाड़ा के तत्वावधान में साधक श्री दिलीपजी पंड्या के माध्यम से नल्दा गांव के 90 बालक-बालिकाओं को स्वेटर बांटे गए

चैतन्य दिवस की शृंखला में 15 जनवरी को त्रैलोक्य आश्रम, बदलापुर में रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। रक्तसंग्रहण के लिए टाटा हास्पीटल के ब्लड बैंक की टीम आई

मकर संक्रांति पर श्री आमलिया गणपति मंदिर पर शिव कृष्ण केन्द्र, तलवाड़ा वह बांसवाड़ा आश्रम द्वारा प्रसाद वितरण किया गया

जनवरी 21 को सेन जोंस, अमरीका में श्री दीपकजी व श्रीमती संजनाजी प्रभाकर के निवास पर अखंड नाम जप संकीर्तन संपन्न

चैतन्य दिवस ध्यान साधना शिविर, बदलापुर

शिव त्रिपुर आश्रम बांसवाड़ा में 21 जनवरी को श्री हीरालाल जी शर्मा के सौजन्य से अखंड नाम जप संकीर्तन संपन्न

शिव त्रिलोचन आश्रम चपोरा में 22 जनवरी को श्री विजय जी माणिकपुरी के सौजन्य से अखंड नाम जप संकीर्तन हुआ

किन्हीं, महाराष्ट्र में 22 जनवरी को अखंड नाम जप संकीर्तन आयोजित हुआ

रमेशचन्द्र राय, जबलपुर

प्रश्न : सूर्य ग्रहण या चंद्र ग्रहण के समय आसन पर बैठकर ध्यान करना चाहिए या नहीं?

उत्तरः ग्रहण काल में अनेक मान्यताओं में धार्मिक कर्मकांड एवं क्रियाकलाप न करने की परंपरा है। मंदिरों एवं देवालयों में पूजा, अनुष्ठान आदि कार्य स्थगित रहते हैं। सामान्यतः इस काल में मंदिरों के पट भी बंद ही रहते हैं।

हमारी परंपरा जप व ध्यान को सर्वोपरि साधन मानती है। वैसे ग्रहण काल व अधिक-मास आदि के समय किए गए साधन का फल अनेक गुना हो जाता है। कर्मकांड एवं साधना दोनों का अपना-अपना महत्व है

तथा दोनों के अपने- अपने नियम। ऐसी स्थिति में ग्रहण काल अपने साधन को तो और ठीक ढंग से करने का स्वर्णिम अवसर है।

ग्रहण काल में जप करना अत्यंत लाभदायक होता है। हमें जो जप मंत्र गुरुदेव से मिला है वही हमारा गुरु मंत्र भी है उसे जपना अति हितकारी है। सच तो यह है कि ग्रहण काल में बाकी के पूजन, दर्शन आदि स्थगित रहते हैं तो हमें अधिक से अधिक साधन करने का समय उपलब्ध हो जाता है। इस समय जप तो करें ही पर आसन पर बैठकर ध्यान करने में भी लाभ ही है। यदि ग्रहण काल में मौन रहते हुए पहने हुए वस्त्रों सहित स्नान करके ध्यान किया जाए तो वह सिद्धिदायक होता है। यहां यह देखना उचित रहेगा कि यदि आसन गीला हो जाता है और वह दूसरे ध्यान के समय तक नहीं सूखने की संभावना हो तो किसी कंबल पर बैठकर भी गीले कपड़ों के साथ ध्यान किया जाए तो उसका कोई सानी नहीं है। ग्रहण काल हो या सामान्य काल साधन का लाभ हर साधक को अवश्य लेना चाहिए।

श्वेता हितेश जोशी, मिलान, इटली

सद्गुरु साधक की मनोकामना पूर्ति करने में तनिक भी देर नहीं करते यह अनेक बार अनुभव हुआ है। मैं चैतन्य दिवस साप्ताहिकी– 2023 के अवसर पर 4 दिन के लिए ही संभागी हो पाई थी। यूं तो मेरे अनेक अनुभव है किंतु यह ताजा होने के कारण साझा कर रही हूं। शिवपुरी आने के पहले व यहां पहुंच कर भी स्वादिष्ट व गरिष्ठ भोजन खूब हो रहा था। 2 दिन बीतने पर मन में आया कि यदि कोई अब कढ़ी–खिचड़ी खिला दे तो कितना अच्छा हो? आश्चर्य हुआ कि अगले ही भोजन में यही प्रसाद बना था। हल्का भोजन करने से पाचन ठीक हो गया तो अच्छा लगने लगा। मुझे अच्छा भोजन बनाने, खाने व खिलाने में बहुत रुचि है। यह मेरी कमजोरी कहें या शौक पर जो है सो है। दिन में इच्छा हुई कि यदि घर होती तो शाम को खीर–पूड़ी बनाकर खाती। चमत्कार ही था कि शाम को अन्नपूर्णा में वही प्रसाद परोसा गया। यह सिलसिला आगे तक चला। ओमीशा जो मेरी बेटी है उसे कचोरी खाना बहुत पसंद है। जब भी उसका जन्मदिन आता या कोई विशेष प्रसंग होता तो वह कचोरी खाने की फरमाइश अवश्य करती है। गुरुदेव ने यह भी भांप लिया और अगली सुबह नाश्ते में कचोरी तैयार थी। आश्चर्य तो तब और ज्यादा हुआ की आखिरी दिन भोजन करते–करते मन में आया कि मोहनथाल प्रसाद रूप में खाने को मिलता तो आनंद आ जाता। शिवपुरी से प्रस्थान करने से पूर्व गुरुदेव की ओर से कुछ प्रसाद दिया गया। जाने की जल्दी के कारण उस

समय उसे नहीं देख पाए। जब घर जाकर मेरे पति हितेश ने बेग खोला तो हमारी खुशियों का ठिकाना न रहा क्योंकि प्रसाद रूप में मोहनथाल ही बांधा गया था। ऐसे गुरुदेव जो भोजन की कामना पूरी करने में तत्पर रहते हैं तो साधन की कामना पूरी करने में तो कितना आशीर्वाद देते रहते हैं यही अनुभव का विषय है।

सूचनाएं

पहले मुद्रित होने वाली पत्रिका 'शिव-प्रवाह' तथा अन्य प्रकाशनों में प्रकाशित सद्गुरु संदेश, अमृतानुभव तथा साधन व मार्ग से जुड़ी अन्य प्रेरक सामग्री पढ़ने के लिए Prabhu Baa मोबाइल एप गूगल प्ले तथा एप्पल एप स्टोर से निः शुल्क डाउनलोड कर सकते हैं।

सौजन्यः श्री नवीन मिश्रा, केलिफोर्निया

सभी केन्द्र संचालक कृपया किसी घर, केन्द्र या स्थानीय आश्रम में होने वाले कार्यक्रमों के फोटो एवं विवरण इस पत्रिका के लिए भी भेजें।

मार्च के अंक से पाठक साधकों की प्रतिक्रिया एवं सुझाव या अन्य कोई उपयोगी सामग्री भी प्रकाशित करेंगे। अवश्य भेजें।

महाशिवरात्रि का पर्व शिवपुरी आश्रम में ही आयोजित होगा। 10 से 17 फरवरी तक अखंड नाम जप साप्ताहिकी रहेगी एवं 18 को महाशिवरात्रि उत्सव गुरुदेव के सान्निध्य में होगा।

ध्यातव्य : 'शिव—गरिमा' पत्रिका में वर्णित विचार व सिद्धांत वासुदेव कुटुंब की अवधारणा के अधीन हैं तथा प.पू. प्रभु बा से दीक्षित साधकों के लिए ही उपयोग हेतु हैं।

एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट द्वारा संचालित काशी शिवपुरी आश्रम, ईंटालीखेड़ा, तहसील—सलुम्बर, जिला—उदयपुर (राज.) से प्रकाशित 'शिव—गरिमा' ई—मासिकी, निः शुल्क।
संपादक : स्वामी गुरुराजेश्वरानंद , मार्गदर्शक : गुरुपुत्र दत्तप्रसाद एवं स्वामी हृदयानंद (स्वामी दादा), ग्राफिक्सः प्रमोद सोनी
संपर्क सूत्र : आश्रम : 9929681423,
स्वामी दादाः 9950502409, संपादक : 9414740814

www.prabhubaa.com